T-12

जय गुरुदेव! धन्य गुरुदेव!!

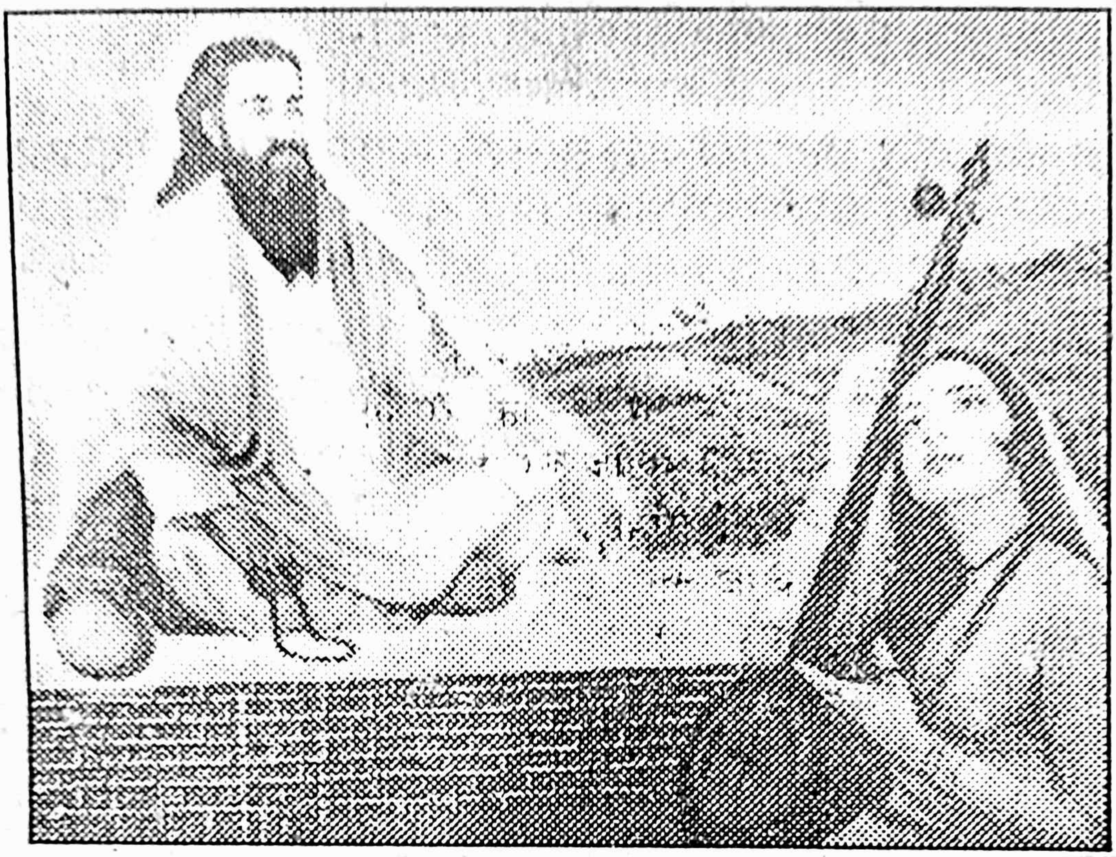

श्री गुरु रविदास जी महाराज और मीरा बाई

ट्रैक्ट नं. 12

धूप दीप नईबेदहि बासा

पहली बार : 2000, जनवरी 2004

अनुवादकर्ता : अश्वनी हीर

प्रकाशक एवं प्रस्तुति :

श्री गुरु रविदास मिशन प्रचार संस्था (पंजाब)

हैड ऑफिस :
एन. बी. 180,
प्रीत नगर, सोढल रोड,
जालन्धर-4
फोन न॰ : 0181-2490309

सब ऑफिस :
वी. पी. ओ. बिनपालके,
नज़दीक भोगपुर खास,
ज़िला जालन्धर-144 201
फोन न॰ : 0181-2725408

मूल्य : स्वयं पढ़ें और दूसरों को पढ़ाएं

शब्द

गुजरी श्री रविदास जी के पदे घरु ३
१ ओंकार सतिगुर प्रसादि॥

दूधु त बछरै थनहु बिटारिओ॥ फूलु भवरि जलु मीनि बिगारिओ॥ १॥ माई गोबिंद पूजा कहा लै चरावउ॥ अवरु न फूलु अनुपू न पावउ॥ २॥ रहाउ॥ मैलागर बेर्हे है भुइअंगा॥ बिखु अम्रितु बसहि इक संगा॥ १॥ धूप दीप नईबेदहि बासा॥ कैसे पूज करहि तेरी दासा॥ ३॥ तनु मनु अरपउ पूज चरावउ॥ गुर परसादि निरंजनु पावउ॥ ४॥ पूजा अरचा आहि न तोरी॥ कहि रविदास कवन गति मोरी॥ ६॥ २॥

(गुरू ग्रन्थ साहिब, पन्ना ५२५)

उपरोक्त शब्द द्वारा श्री गुरू रविदास जी प्रभु पूजा में लगे मनुष्य को तर्कशील दलीलों से समझाते हुए कहते हैं कि हे मनुष्य! पूजा अर्चना के लिए जो पदार्थ तुम गोबिन्द (प्रभु) को भेंट करने जा रहे हो वह तो पहले ही अपवित्र, अस्वच्छ अथवा जूठे हैं जैसे गाय का दूध प्राप्त करने के लिए पहले बछड़े की सहायता से दूध उतारा, तब तुम्हें दूध प्राप्त हुआ। इस प्रकार वह दूध अपवित्र अथवा जूठा हो गया। उसको बछड़े ने पहले ही अस्वच्छ कर दिया। तुम वही दूध प्रभु को कैसे भेंट करोगे। जो फूल प्रभु को भेंट करने के लिए ले जा रहे हो, उन फूलों को भी भंवरों ने पहले ही अस्वच्छ किया हुआ है। इसी प्रकार जिस नदी का जल तुम प्रभु को चढ़ाने जा रहे हो, वह भी नदी में रहने वाले जीव-जन्तुओं ने अपवित्र बना दिया है। हे मनुष्य! तुम प्रभु की पूजा कैसे करोगे, तुम्हारी सारी सामग्री, पदार्थ तो पहले ही अपवित्र हैं, इसी तरह चन्दन को भी सांपों ने अपवित्र बनाया हुआ है।

धूप, प्रसादि को मनुष्य तैयार करते समय इसकी सुगन्धि ले लेता है जिससे यह पदार्थ भी अस्वच्छ हो जाते हैं। इस प्रकार गुरू जी के अनुसार इन पदार्थों से पूजा-अर्चना नहीं हो सकती।

अब गुरू जी अपनी पूजा सामग्री प्रभु के आगे भेंट करते हैं और हमें भी यह सामग्री भेंट करने के लिए कहते हैं। वे कहते हैं, हे प्रभु! मै तेरी पूजा के लिए अपना तन, मन सभी कुछ अर्पित करता हूं। इस प्रकार हे गुरू-प्रेमियो, भक्तो, आओ हम भी गुरू जी के दर्शाए गए मार्ग पर चलकर अपने प्रभु को प्राप्त करें।

आगे गुरू जी कहते हैं कि हे प्रभु अगर तेरी पूजा इन्हीं अपवित्र वस्तुओं

से होती, यही वस्तुएं पूजा के लिए आवश्यक होतीं तो मेरा क्या हाल होता, मैं तो तेरी पूजा से वंचित रह जाता। मैं यह शुद्ध वस्तुएं कहां से लाता। हे प्रभु तेरे साथ मेरा मिलाप कैसे होता।

अतः इस शब्द के सार से स्पष्टतया गुरू जी हमें यह समझा रहे हैं कि प्रभु पिता की पूजा-अर्चना के लिए हमें किसी संसारिक पदार्थ की आवश्यकता बिलकुल नहीं है, जो पदार्थ अथवा वस्तुएं हम प्रयोग करते हैं, पूजा के लिए व्यर्थ हैं, केवल दिखावा मात्र ही हैं, प्रभु के लिए योग्य नहीं हैं। इन पदार्थों के द्वारा की गई पूजा प्रभु का अपमान है। इसलिए हमें पूजा के लिए इन पदार्थों का सहारा नहीं लेना चाहिए। गुरू जी के अनुसार हमें पूजा के लिए प्रभु को तन, मन अथवा स्वयं को अर्पित करना चाहिए। यह अर्पन कैसे करना है, गुरू ज़ी के अनुसार संगत की सेवा करके, गरीब, लाचार, दुःखी और बीमार को सहारा देकर प्रभु का नाम लेकर हमें अपना तंन, मन अर्पित करना है। इस तरह गुरू जी के दर्शाए मार्ग पर चलकर हम समाज की सेवा तथा सुधार कर सकते हैं। गुरू जी के उपरोक्त वचनों को पूरा करते हुए उन्हें अपनी सच्ची श्रद्धा को प्रकट कर सकते हैं।

संक्षेप जीवन परिचय : श्री गुरू रविदास जी

जब ब्राह्मणवाद ने भारतीय बेसहारा दबी-कुचली नीची समझी जाने वाली जातियों, गरीबों को असहनीय कष्ट देकर गुलाम बनाने की कोशिश की तो इन दुखियों की पुकार सुनकर 1414 ई० (सम्वत् 1471) पूर्णिमा दिन रविवार को दीन-दुखियों के मसीहा जगत-गुरू गुरू रविदास जी का आगमन हुआ।

आपकी जन्म तिथि सम्बन्धी विद्वानों में अभी भी मतभेद हैं। परन्तु बहुत से बुद्धिमान लेखकों, इतिहासकारों के विचारों, डेरा सचखण्ड बल्लां द्वारा की गई खोज, संत मीरा बाई तथा सिकन्दर लोधी के जीवन काल के अन्तर्गत उपरोक्त तिथि ही उचित मानी जा रही है।

आपके जन्म-स्थान के सम्बन्ध में भी अभी तक एक राय नहीं हो पाई है। बहुत से विद्वान आपका जन्म बनारस स्थित हिन्दू युनिवर्सिटी के नज़दीक सीर गोवरधनपुर बताते हैं और कुछ के अनुसार आप का जन्म बनारस छावनी के रेलवे स्टेशन से 3-4 किलोमीटर पश्चिम की ओर स्थित चरमकारां की बस्ती मन्दुआ ढीह में हुआ। परन्तु अधिकतर विद्वानों और डेरा सचखण्ड बल्लां की नवीन खोज के अन्तर्गत सीर गोवरधनपुर को ही प्रमाणिकता दी जा रही है। आज यहां पर डेरा सचखण्ड बल्लां, जो रैदास समुदाय का धार्मिक

प्रतिनिधित्व कर रहा है, ने बहुत ही सुन्दर मन्दिर का निर्माण किया है। यहां पर दूर-दूर से श्रद्धालु जत्थे आकर अपने इष्ट को याद करते हैं। यद्यपि यह पावन स्थान सर्वमाननीय हो गया है, परन्तु फिर भी हमें मन्दुआ ढीह स्थान पर भी विशेष ध्यान देना चाहिए, क्योंकि हो सकता है मन्दुआ ढीह स्थान पर सतगुरू निवास करते हों या किरत कर संगत को उपदेश देते हों। गुरू जी कथन करते हैं :

मेरी जाति कुट बांढला ढोर ढोवंता

नितहि बानारसी आस पासा॥ (गुरू ग्रन्थ साहिब, पन्ना १२९३)

इसलिए हमें इस स्थान का भी विकास करना चाहिए।

आपका परिवार :

आपके पिता जी का नाम संतोखदास और माता का नाम कलसा था। आपकी पत्नी का नाम लूणा और आपके सपुत्र का नाम विजय दास था।

आपने भारत की अनेक यात्राएं की। इसी कारण आपके विभिन्न राज्यों में बसे श्रद्धालुओं ने आपको विभिन्न नाम से याद किया और करते हैं। संत मीरा बाई आपको रैदास जी के नाम से याद करती थी। इस प्रकार आपके अन्य कई प्रकार के मिलते-जुलते नाम थे जैसे रविदास, रूईदास, रोईदास, राएदास आदि। लेकिन आपका अधिकतर प्रचलित नाम गुरू ग्रन्थ साहिब में अंकित नाम सतगुरू रविदास जी ही है। अलग अलग भाषा बोलने वाले लोगों ने अपनी भाषा की लय के अनुसार आपका नाम रख लिया।

शिक्षा और वाणी :

गुरू साहिब के जीवनकाल में दलितों, शूद्रों को शिक्षा ग्रहण करने की मनाही थी। इसलिए कोई भी पंडित, मौलवी, दलितों को शिक्षा देने के लिए तैयार नहीं था। परन्तु गुरू जी ने अपनी वाणी में हिन्दी, पंजाबी, ब्रिज, फारसी शब्दों का प्रयोग किया। निःसन्देह उन्हें प्रलोक से ही लोक भाषाओं का ज्ञान था। पारब्रह्म ने स्वयं गुरू जी को शिक्षा का वरदान देकर संसार में भेजा था। मिहर चन्द मिहर की पुस्तक "नूरी रविदास" के अनुसार पंजाबी लिपी (गुरुमुखी लिपी) के रचनाकार गुरू रविदास जी ही हैं। संत जसवंत सिंह जी ने लाहौर उच्च न्यायालय (हाई कोर्ट) से मुकद्दमा जीतकर यह सिद्ध कर दिया है कि पंजाबी के अक्षरों की रचना गुरू रविदास जी ने की है।

आप जी के 40 शब्द तथा एक श्लोक गुरू ग्रन्थ साहिब में संकलित हैं। पहली उदासी के समय जब श्री गुरू नानक देव जी बनारस पहुंचे तो उनका मिलन गुरू रविदास जी के साथ हुआ। दोनों महापुरुषों में अध्यात्मिक विषय पर विचार-विमर्श हुआ। गुरू नानक देव जी गुरू रविदास साहिब

की वाणी और विचारधारा से बहुत प्रभावित हुए और आपके द्वारा रचित वाणी लेने की इच्छा प्रकट की। गुरू साहिब ने उस समय जितनी भी वाणी लिखी वह सब गुरू नानक साहिब को दे दी, जिसे बाद में गुरू अर्जुन देव जी ने गुरू ग्रन्थ साहिब में सुशोभित कर गुरू ग्रन्थ साहिब को जगत गुरू का रूप दिया।

गुरू जी की उदासियां :

गुरू जी ने छुआ-छात की भट्ठी में जल रही और वहमों, पाखण्डों और अंध-विश्वासों में फंसी कौम (समुदाय) का मार्ग-दर्शन तथा प्रमात्मा से जोड़ने के लिए बहुत सारी पैदल यात्राएं की। इनमें गुरू जी के जन्म स्थान उत्तर प्रदेश के कई शहर, राजस्थान, मध्य प्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र, उड़ीसा, हैदराबाद, कर्नाटक, बिहार, पाकिस्तान, अफगानिस्तान, जम्मू-कश्मीर, हिमाचल प्रदेश तथा पंजाब के कई ज़िलों जैसे खुराली (होशियारपुर), फगवाड़ा, सुलतानपुर लोधी (कपूरथला), (गुरूद्वारा, गुरू का बाग), लुधियाना, अमृतसर आदि स्थानों की उदासियां (यात्राएं) की।

वाणी गुरु गुरु है वाणी॥

इसके अतिरिक्त गुरू रविदास जी की बहुत सी वाणी दूसरे अन्य धार्मिक ग्रन्थों में मिलती है। यहां यह भी एक वर्णन करने योग्य बात है कि बहुत से महापुरुषों, गुरूओं ने अपनी वाणी में गुरू रविदास जी की महिमा गाई है।

आपकी विचारधारा से प्रभावित होकर बहुत से राजे-महाराजे, रानियां, आपके सेवक बने, जिनमें से संत मीरा बाई, राजा पीपा, रानी झाला बाई, राणा सांगा आदि मुख्य हैं। उस समय श्री गुरू रविदास जी को राजगुरू कहा जाता था।

गुरू रविदास जी के इतिहास की खोज संक्षेप में करनी अभी बाकी है, जो हमारे समुदाय का मार्ग दर्शन करेगी। हमें चाहिए कि विश्व स्तर पर गुरू रविदास मिशन संस्था बनाई जाए। प्रत्येक वर्ष संस्था की ओर से विश्व कानफ्रैंस करवाई जाए। फिर कानफ्रैंस में हुए विचार-विमर्श के आधार पर गुरू जी के जीवन से सम्बन्धित कथाओं, कहानियों, घटनाओं और तिथियों का चुनाव कर गुरू जी के जीवन का इतिहास अलग-अलग भाषाओं में प्रकाशित किया जाए ताकि हमारी कौम (समुदाय) के लोग अलग-अलग विचारधाराओं का त्याग कर केवल एक माला के मोती बन जाएं तथा सारी दुनिया में गुरू साहिब की विचारधारा का प्रचार किया जाए। जब तक हमारे विचार एक नहीं तब तक हमारी कौम (समुदाय) एकजुट नहीं हो सकती।

* * *

श्री गुरु रविदास जी की अदभुत देन

लेखक : मास्टर रामधन नांगलू

कहि रविदास खलास चमारा॥

जो हम सहरी सु मीतु हमारा॥ *(राग गउड़ी, पन्ना ३४५)*

गुरू रविदास जी ने अपनी वाणी में 'चमार' शब्द का प्रयोग लगभग 18 बार किया है। स्वयं को 'चमार' जाति का सिद्ध करते इस शब्द का प्रयोग लगभग 9 बार वाणी में आया है। इसलिए यह शब्द हमारे लिए बहुत महत्त्व रखता है। यह शब्द 'चमार' जाति के लिए वरदान सिद्ध हुआ। इससे चमार जाति को समाज में अपना अस्तित्व बनाए रखने में बहुत सहायता मिली है। इस शब्द का प्रयोग कर उच्च जाति वाले घमण्डी लोग हमारी जाति को दुत्कारते थे, परन्तु गुरू रविदास जी ने इस शब्द का अपनी वाणी में प्रयोग कर इस शब्द को पवित्र तथा आदरणीय बना दिया है। इस शब्द से तिरस्कार और हीन भावना को बाहर निकाल फैंका है। यह शब्द चमार जाति के लिए कलंक से अलंकार बन गया है। इस शब्द से गुरू रविदास जी ने जाति अभिमान करने वालों को ललकारा कि "हां, मैं चमार हूं, मुझे जितना कष्ट देना चाहते हो दो, जितनी यातनाएं देना चाहते हो, दो" परन्तु जाति अभिमानी धार्मिक स्तर पर इस चमार को कुछ भी नुक्सान न पहुंचा सके। इसके विपरीत उन्हें इस चमार को गुरू मानकर नतमस्तक होना पड़ा।

गुरू रविदास जी के प्रभावशाली व्यक्तित्व के कारण उच्च जातियों, धर्म के ठेकेदारों ने गुरू जी को अपनी जाति में सम्मिलित करने का यत्न किया। आपकी पवित्र वाणी में चमार शब्द का प्रयोग होने के कारण वह गुरू जी को अपने में मिला न सके। परन्तु जब कोई सफलता ना मिली तो उन्होंने गुरू जी के बारे में मिथहास रचकर यह सिद्ध करने की कोशिश की कि गुरू रविदास पिछले जन्म में ब्राह्मण थे। लेकिन गुरू जी ने स्वयं को चमार कहने में गर्व महसूस किया और इसी रूप में प्रमात्मा से आशीर्वाद प्राप्त किया। श्री गुरू रविदास जी इस नीच 'चमार' समझी जाने वाली जाति से जुड़ कर आनन्दित तथा सन्तुष्ट रहते थे और वह प्रभु से कोई शिकवा नहीं किया करते थे, बल्कि आप तो प्रभु से प्रार्थना करते थे, कि हे भगवान! मुझे फिर इसी चमार जाति में पैदा करना ताकि मेरी प्रीत, प्यार तुमसे बना रहे। वह इस भाव को अपनी पवित्र वाणी में इस प्रकार स्पष्ट करते **हैं** :

कहि रविदास सुनि केसवे, अंतह कर विचार॥

तुमरी भगति के कारण फिर होव हो चमार॥

श्री गुरू रविदास जी के मिशन का रंग

हर समुदाय ने अपनी अलग पहचान व अस्तित्व बनाए रखने के लिए अलग-अलग रंग अपनाए हुए हैं, जैसे मुस्लिम समुदाय ने हरा, सिख समुदाय ने केसरी और हिन्दुओं ने लाल तथा पीला रंग सुनिश्चित किया है। परन्तु गुरू रविदास विचारधारा के साथ सम्बन्धित दलित समुदाय का रंग कौन-सा है? जिससे इसकी पहचान हो सके। अन्य समुदायों की भान्ति दलित समुदाय को एक अलग रंग सुनिश्चित करना चाहिए। इस समुदाय के रंग की पुष्टि गुरू जी ने अपनी वाणी में इस प्रकार की है :

जैसा रंगु कसुंभ का तैसा इहु संसारु॥
मेरे रमईए रंगु मजीठ का कहु रविदास चमार॥

(गुरू ग्रन्थ साहिब, पन्ना ३४६)

इस प्रकार हमारे समुदाय का रंग 'मजीठ' का रंग है। पंजाब की बहुत-सी प्रसिद्ध गुरू रविदास संस्थाओं ने इस रंग को मान्यता दी हुई है। मजीठ एक किस्म की बेल है, जिसकी सूखी लकड़ियों को भिगोने के बाद एक रंग निकलता है। इस रंग को मजीठ का रंग कहते हैं। यह रंग बहुत अधिक गहरा लाल रंग जैसा होता है और काला रंग इस में महसूस होता है। अधिकतर जानकारी प्राप्त करने के लिए हमारी संस्था से पत्र द्वारा या फोन से सम्पर्क करें। इस प्रकार हमें गुरू रविदास जी के मन्दिरों, गुरुद्वारों, भवनों में मजीठ के रंग का निशान साहिब (धार्मिक झण्डा) सुशोभित करना चाहिए। मजीठ के रंग का कपड़ा सिर पर बांधने के लिए प्रयोग करना चाहिए। विवाह के समय दूल्हे को मजीठ के रंग की पगड़ी वांधनी चाहिए और लड़कियों (दुल्हनों) को मजीठ के रंग के दुपट्टे लेने चाहिएं। हमारी धार्मिक संस्थाओं को अपने बैनर तथा अन्य वस्तुओं में मजीठ के रंग का प्रयोग अवश्य करना चाहिए और मजीठ के रंग का आदर, सम्मान तथा प्रचार करना चाहिए।

* * *

हम श्री बग्गू राम जी के परिवार के आभारी हैं

इस पत्रिका का सारा खर्च स्वर्गीय मिसत्री बग्गू राम जी, गांव पंडोरी निझरां के परिवार की ओर से किया गया है। हम उनके समस्त परिवार के आभारी हैं।

-रछपाल सिंह बधन

याद रखने योग्य बातें

- गुरू रविदास जी की विचारधारा मूर्ति-पूजा का खण्डन करती है।
- गुरू रविदास जी की विचारधारा को अपनाने के बिना दलित समाज उन्नति नहीं कर सकता।
- गुरू रविदास जी के गुरू पारब्रह्म ही थे।
- गुरू जी को 'अवतार' शब्द से सम्बन्धित करना ठीक नहीं।
- चमार जाति का होने पर हमें हीन-भावना से स्वयं को दुत्कारना नहीं चाहिए और न ही हमें अपनी जाति छिपानी चाहिए क्योंकि हम गुरू जी के अंश हैं, जिन्होंने हमें एक तर्कमय, क्रान्तिकारी विचारधारा प्रदान की। उन्होंने स्वयं को वाणी में कई बार चमार शब्द से अलंकरित किया। हमें उनसे प्रेरणा लेनी चाहिए।

प्रार्थना

- यदि आप इस ट्रैक्ट को अपने इलाके (शहर) में गुरू प्रेमियों को मुफ्त बांटना चाहते हैं तो यह हमसे 100 रु. प्रति सैंकड़े के हिसाब से ले सकते हैं, इसके लिए कृप्या मनीआर्डर भेजें।
- गुरू जी की वाणी का हिन्दी **गुटका** साहिब 10 रुपये की टिकटें भेज कर मंगवाया जा सकता है।
- मिशन तथा प्रचार के लिए अपने विचार भेजने का कष्ट करें।
- संस्था का सदस्य बनने के लिए अपना पूरा पता तथा 5 रुपये की डाक-टिकटें भेजें।

* * *

नोट : हमारी संस्था के विदेश प्रतिनिधि और सदस्य श्री महिन्द्र संधू महेड़ू जी की पुस्तक "सति भाखै रविदास" प्रकाशित हो चुकी है तथा यह हमारी संस्था की ओर से आप प्राप्त कर सकते हैं। मूल्य 25-00 रु.

पता : हैड ऑफिस :
स. रछपाल सिंह बधन,
एन. बी. 180, प्रीत नगर,
सोढल रोड, जालन्धर-4
फोन न॰ : 0181-2490309

पता : सब ऑफिस :
स. दिलबाग सिंह (दफ्तर सैक्रेट्री)
वी. पी. ओ. बिनपालके, नज़दीक भोगपुर खास, ज़ि. जालन्धर- 144 201
फोन न॰ : 0181-2725408

टाईप सैटिंग : सुरजीत कम्प्यूटर्ज़, बस्ती शेख, जालन्धर।
मुद्रक : परिवर्तन प्रैस, जालन्धर।